मैया मैं नहिं माखन खायौ।

ख्याल परैं ये सखा सबै मिलि, मेरैं मुख लपटायौ॥

देखि तुही सींके पर भाजन, ऊँचैं धरि लटकायौ।

हौं जु कहत नान्हे कर अपनै मैं कैसैं करि पायौ॥

मुख दधि पोंछि, बुद्धि इक कीन्ही, दोना पीठि दुरायौ।

डारि साँटि, मुसुकाइ जसोदा, स्यामहि कंठ लगायौ॥

बाल-बिनोद-मोद मन मोह्यौ, भक्ति-प्रताप दिखायौ।

सूरदास जसुमति कौ यह सुख, सिव बिरंचि नहिं पायौ॥